संघ स्थापना की पृष्ठभूमि :– साधुमार्गी संघ अनादिकाल से भारतभूमि पर धर्म और संस्कृति की मानव कल्याणकारी धाराओ में प्रवाहित है। जैन धर्म के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव साधुमार्गी परम्परा के उदाता माने जाते है। प्रभु ऋषभदेव प्रणीत निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति को भगवान महावीर ने समुन्नत किया। महावीर की करूणा ने मानव उत्थान के नव नव आयाम सुजित किये। साधुमार्गी परम्परा का विकास होता रहा। इसी परम्परा में पंचम गणधर आचार्य सुधर्मा स्वामी मे चौहत्तरवें पाट पर महान् तपोधनी, क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. विराजमान हुए। आपकी शिष्य परम्परा में परमतपस्वी आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा. क्रियावान आचार्य श्री चौथमल जी म.सा., अदभूत स्मृतिधारक आचार्य श्रीलालजी म.सा. प्रखर राष्ट्रधर्मी ज्योर्तिधर श्री जवाहराचार्यजी म.सा. तथा शांत क्रांति के दाता आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. हुए।

आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. सादडी साधु सम्मेलन में **श्रमण संघ** के नायक चयनित हुए ताकि आपको उपाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस पद का दायित्व आपने दृढता और दूरदर्शिता से निभाया किन्तु जब आपने यह अनुभव किया की प्रभु महावीर के शपसव सिद्धांतों की अबाध पालना में, शुद्धाचार की पालना में अपेक्षित सहकार प्राप्त नहीं हो रहा है तो आपने सहज भाव से श्रमण संघ का परित्याग कर दिया।

नवीन युग का सूत्रपातः वयोवृद्ध आयार्च श्री गणेशीलालजी म.सा. अस्वस्थ रहने लगे थे। उन्होने दांता के लाल सन्त पंडितरत्न श्री नानाला जी म.सा. को संवत् 2019 की अश्विन कृष्णा नवमी को युवाचार्य बनाने की घोषणा कर दी। आचार्च श्री गणेशीलालजी म.सा. की इस घोषणा के बाद आसोज सुदी 2 को चादर प्रदान दिवस निर्धारित किया गया। इस प्रकार घोषणा और चादर प्रदान के बीच मात्र आठ दिन का ही अन्तर था।

इस प्रकार आसोज सुदी 2 सं 2016 दिनाकं 30.09.1962 को आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. ने अपने करकमलो से पंडितरत्न मुनि श्री नानालालजी म.सा. को विधिवत् युवाचार्य पद की चादर प्रदान की। भारत गौरव मेंवाड की राजधानी उदयपुर में भव्य राजमहलों के प्रांगण में यहा भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। चादर प्रदान दिवस के इस पावन प्रसंग के साक्षी बनने के लिए देशभर से हुक्मगच्छ के श्रावक–श्राविका, श्रीसंघो के अध्यक्ष के अध्यक्ष मंत्री व प्रमुख जन एकत्र हुए थे।

संघ स्थापना :– पूर्व में हितेच्छु श्रावक संघ के नाम से विद्यमान था। आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. के श्रमण संघ में उपाचार्य बनने के पश्चात् हितेछु श्रावक संघ की गतिविधियाँ धीमी पड़ गई थी। **आचार्य श्री के श्रमण संघ के परित्याग के पश्चात् वि.सं.2019 की आसोज सुदी 2 को उदयपुर की वीर भूमि पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की विधिवत् स्थापना की गई** । संघ का उदेश्य सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना तथा अभिवृद्धिपूर्वक समाजोन्नति के लिए कार्य करना घोषित किया गया। उसी दिन भीनासर (बीकानेर) निवासी श्री छगनलाल जी बैद को संघ का प्रथम अध्यक्ष तथा बीकानेर निवासी श्री जुगराजजी सेठिया को प्रथम मंत्री निर्वाचित किया गया। साथ ही साथ प्रथम अखिल भारतीय कार्यकारिणी भी निर्वाचित की गई।

इसी दिन संघ का श्रमणोपासक नाम से मुखपत्र प्रकाशित करने का निर्णय किया गया और इस अखिल भारतीय पत्र के प्रथम सम्पादक श्री जुगराजजी सेठिया बीकानेर मनोनीत किये गये। चतुर्विध संघ में हर्ष छा गया।

संघ इतहास :– स्व. आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. ने सन् 1952 में घाणेराव सादडी में वृहद् साधु सम्मेलन में अनेक संप्रदयों के आचार्यो, मूर्धन्य मुनिराजों के विशेष आग्रह पर उपाचार्य पद स्वीकार किया। चूँकि श्री आत्माराम जी म.सा. वृद्ध थे अतः उनको सम्मान देने हेतु आाचार्य बनाया गया और संघ संचालन के सम्पूर्ण अधिकारों सहित आचार्य श्री गणेशलाल म.सा. को उपाचार्य पद से अलंकृत किया गया। यह स्थानकवासी समाज के इतिहास की अतिशिष्ट एवं अद्वितीय घटना थी। 22 सम्प्रदायों के प्रतिनिधि मुनियों ने एक स्वर से आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. को अपना नेतृत्वकर्ता के रूप में स्वीकार किया।

अनेक वर्षो तक उन्होने सकुशल रीति से विशाल श्रमण संघका संचालन किया । जब उन्होने देखा कि कहीं–कहीं शिथिलाचार पनप रहा है और अनेक मुनिगण प्रत्यक्ष–परोक्ष शिथिलाचार को बढ़ावा दे रहे है तब उन्होने तीर्थंकर देवा कीं शुद्ध संयम मर्यादा को सन्मुख रखते हुए उनकी आत्मकल्याण हेतु यह साधुवेश स्वीकार किया है अतः उन्होने सैंकड़ों सन्तों की श्रद्धा–भक्ति एवं विशाल श्रावक समुदाय की पूजा–प्रतिष्ठा को पीठ पीछे रखते हुए निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा हेतु मान–अपमान की परवाह न करते हुए एक सशक्त क्रान्तिकारी कदम उठाया और शुद्ध संयम के आराधक मुनियों के साथ ही अपना सम्बन्ध कायम रखा। इसी कडी में हुक्म परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए उन्होने भविष्या के संघ संचालन हेतु पंडितरत्न मुनि श्री नानालालजी म.सा. को युवाचार्य पद प्रदान किया।

आश्विन शुक्ला द्वितीया संवत् 2019 (सन् 1962) को उदयपुर में विशाल राजप्रांगण में मुनि श्री नानालालजी म.सा. को आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. ने लगभग 30,000 की जनमोदिनी के समक्ष युवाचार्य पद की धवल चादर ओढ़ाई और उसी दिन आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी म.सा. के सम्प्रदाय की हितेच्छु श्रावक मण्डल के नाम से एक संस्था गतिमान थी। श्रमण संघ की स्थापना के पश्चात् उस संस्था की गतिविधि कुछ मन्द हो गई थीं अतः इस सम्प्रदाय के प्रति श्रद्धालु श्रावक वर्ग ने सम्पूर्ण संघ के उन्नायक के लिए श्रद्धापूर्वक **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना की।**

वह ऐसा समय था जब श्री साधुमार्गी जैन संघ के समक्ष कठिन चुनौतियाँ थी। श्रमण संघ का प्रबल विरोध, साधु-साध्वियों की अल्प संख्या, विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान साधुमार्गी श्रावकों के पारस्परिक परिचय का अभाव, कुछ-कुछ श्रावकों का पारस्परिक विचार भेद, संघ संचालन में अनुभवी बुजुर्ग श्रावकों की कमी लेकिन फिर भी आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. एवं युवाचार्य श्री नानालालजी म.सा. जैसे महान् महापुरुषों की चरण सन्निधि में कुछेक युवा जुझांरू, कर्मठ, संघ समर्पित निस्वार्थ कार्यकर्त्ताओं का अटूट मनोबल, प्रबल उत्साह और वक्त की मांग के बलबूते पर श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की नींव भरी गई और फिर प्रारम्भ हुआ एक विशाल संघ प्रासाद के सुनिर्माण का अथक अविराम क्रम, जिसके परिणामस्वरूप आज पचास वर्षो के बाद संघ के सुन्दर महल को देखकर हर किसी संघ सदस्य का मन हर्षोल्लासित हो उठता है। किसी भी संघ की विकास यात्रा अनेक कठिन मोड़ों से गुजरती है। कोई भी समुदाय कभी बाह्य चोटों से घायल नहीं होता, भीतर का द्वन्द्व ही संस्था, समुदाय, संघ की गति को कमजोर किया करता है। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के आचार्यो का महान् आशीर्वाद ही कहें कि श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ ने सशक्त आंतरिक बल के कारण निरन्तर बाह्य व भीतरी विरोधों से संघर्ष करते हुए प्रगति का रथ गतिमान रखा। इस प्रसंग पर हम संघ के उन सभी महान् श्रावक-श्राविकाओं के प्रति हृदय से नतमस्तक हैं जिन्होंने सबकुछ भूलकर संघ की सेवा के लिए अपने जीवन का अमूल्य योग और भोग दिया।

आचार्य श्री नानेश के आचार्य पदारोहण के साथ ही एक तरफ संघ में साधु-साध्वियों की संख्या बढ़ती गई और दूसरी तरफ श्रावक संगठन भी विस्तार को प्राप्त होता गया। विभिन्न काल खण्डों में संघ ने विभिन्न दिशाओं में अपना निरन्तर विस्तार किया। रतलाम के प्रथम चातुर्मास के पश्चात् जब आचार्य श्री नानेश ने हजारों बलाई जाति के व्यक्तियों को व्यसनमुक्त बनाकर जैन धर्म से जोड़ा एवं उन्हें धर्मपाल संज्ञा से सम्बोधित किया तो संघ ने धर्मपालों के उत्थान के लिए एक विशेष प्रवृत्ति प्रारम्भ की। रतलाम में श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार नामक एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की गई। उदयपुर में श्री गणेश जैन छात्रावास का निर्माण करवाया गया। सम्पूर्ण संघ के धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्थापना की गई। जिन-जिन क्षेत्रों को चारित्रात्माओं के चातुर्मास का लाभ नहीं मिल पाता वहाँ पर्युषण पर्व में धार्मिक आराधना कराने हेतु योग्य श्रावक-श्राविका वर्ग को भेजने की व्यवस्था हेतु श्री समता प्रचार संघ की स्थापना की गई। स्वधर्मी भाई-बहिनों के चिकित्सा सेवा हेतु समता जनकल्याण प्रन्यास की स्थापना की गई। विभिन्न क्षेत्रों में श्रावक-श्राविकाओं के धर्म आराधना हेतु संघ ने समता भवन निर्माण की योजना बनाई। श्रावक-श्राविकाओं को श्रेष्ठ एवं उच्च स्तरीय धार्मिक ज्ञान से परिपूर्ण रखने हेतु साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना की गई। तात्विक ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु अलग से आगम एवं तत्व प्रकाशन समिति की स्थापना हुई। श्री गणेश जैन छात्रावास के समीप आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र के विशाल भवन का निर्माण आध्यात्मिक कार्यो को गति देने हेतु हुआ। इसी परिसर से अभी-अभी विद्वत् निर्माण प्रकल्प के भवन का निर्माण हुआ है। स्वाध्यायियों को प्रशिक्षित करने हेतु स्वाध्यायी गुणवत्ता विकास कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। गाँव-गाँव, शहर-शहर में बच्चों में धार्मिक ज्ञान एवं संस्कार बढ़ाने हेतु समता संस्कार पाठशाला प्रारम्भ की गई। आचार्य श्री रामेश के व्यसनमुक्ति आह्वान को साकार करने हेतु व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण का प्रकोष्ठ बना। साधुमार्गी प्रतिभा खोज कार्यक्रम के माध्यम से देश-विदेश में रही प्रतिभाओं को संघ से जोड़ने का पुरुषार्थ प्रारम्भ हुआ।

सिरीवाल प्रवृत्ति, जैन संस्कार पाठ्यक्रम, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार, सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी, अहिंसा समता एवं प्राकृत शोध संस्थान, दानपेटी योजना, नानेश निकेतन, स्वधर्मी सहयोग आदि प्रवृत्तियाँ संघ विकास का आधार रही।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की स्थापना के साथ ही संघ के मुखपत्र के प्रकाशन का भी कार्य आवश्यक महसूस हुआ ताकि सभी संघ सदस्यों को संघ की गतिविधियों के बारे में जानकारी एवं सूचना प्राप्त कराने के साथ ही उन्हें नित नये ज्ञान के आयामों से समृद्ध किया जा सके।